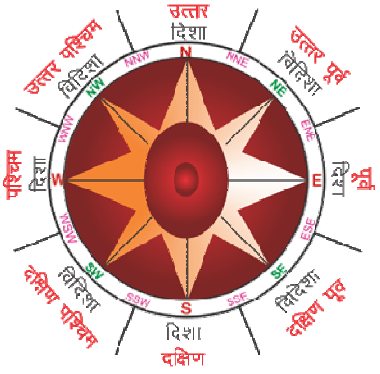

‘वास्तु’

BHUMI VASTU

भूमि को आकार, झुकाव, ढलाव और कोणों के अनुसार अनेकों भागों में बांटा गया है। जिससे उसके फायदे और नुकसान का पता चलता है जैसे:—

1. बिल्कुल वृत्ताकार भूमि ज्ञान तथा धनागम के लिए लाभदायक होती है।

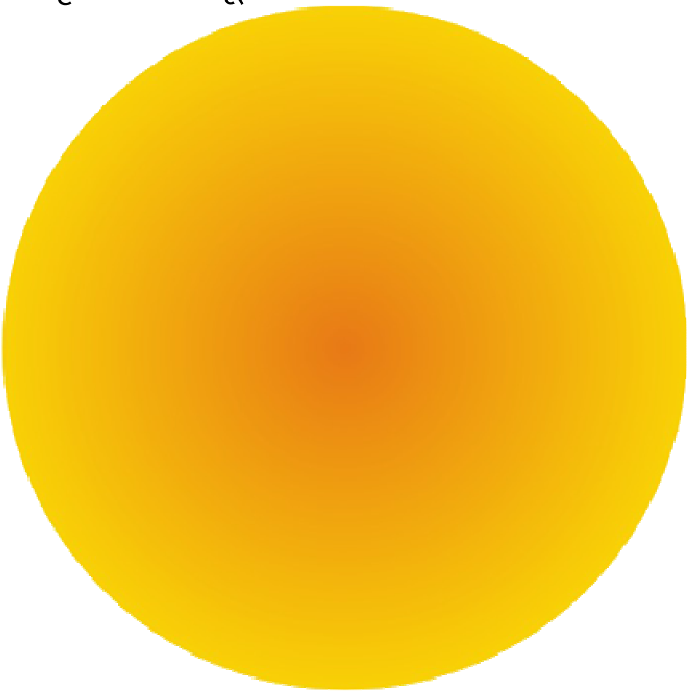

2. छः बराबर भुजा वाली भूमि उन्नतिदायक होती है।

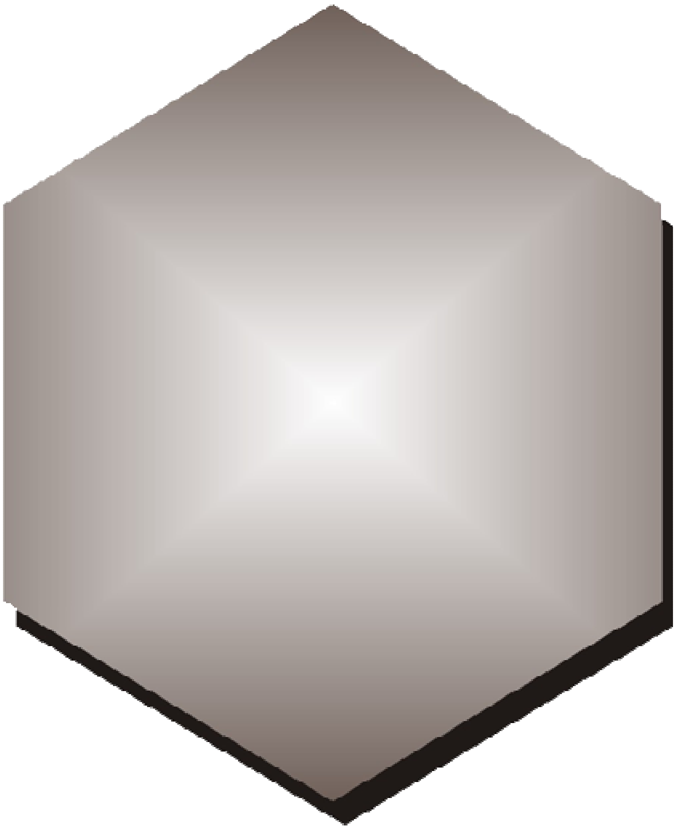

3. गोमुखी भूमि, जिसका अगला भाग पिछले भाग से छोटा हो उसे गोमुखी भूमि कहते हैं। यह वास करने के लिए शुभ पर व्यापार करने के लिए अशुभ होती है।

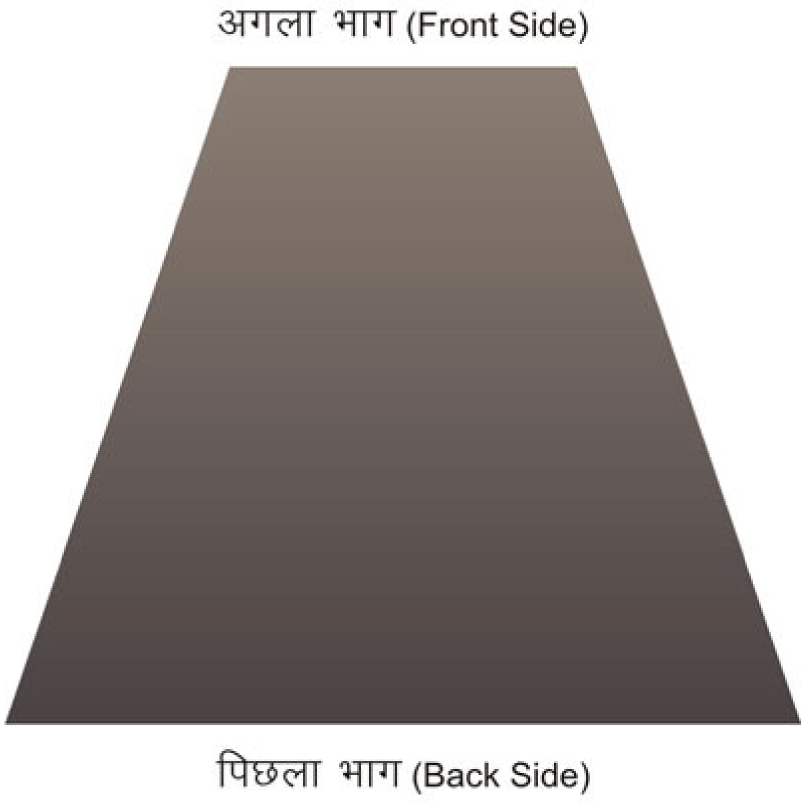

4. सिंहमुखी भूमि जिसका अगला भाग पिछले भाग से बड़ा हो उसे सिंहमुखी भूमि कहते हैं। यह व्यापार करने के लिए शुभ पर वास करने के लिए अशुभ होती है।

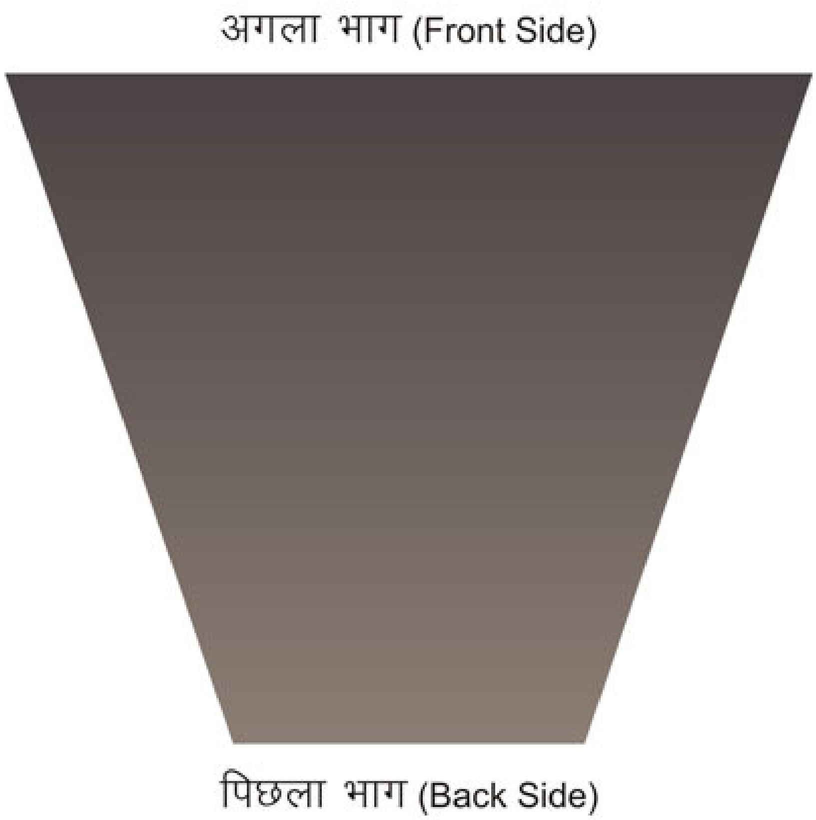

5. आठ कोणों वाली भूमि अनेकों प्रकार के कार्यों के लिए शुभ है।

6. ईशान कोण की तरफ बड़ी हुई भूमि श्रेष्ठ भूमि में आती है।

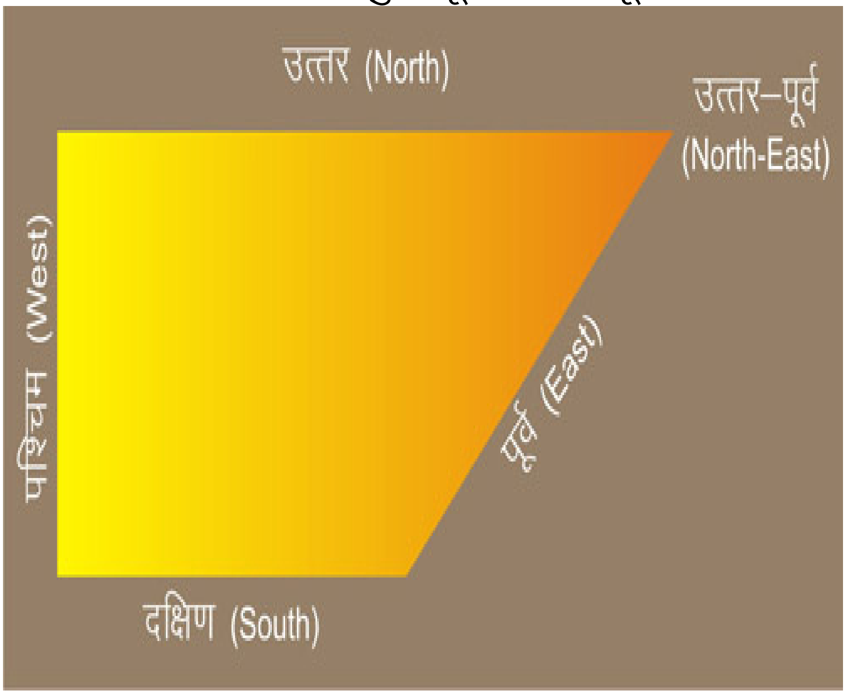

7. पूरी तरह से आयताकार जो एक समतल भूमि पर हो ऐसे भूखण्ड़ के स्वामी को हमेशा ही सफलता प्राप्त होती है।

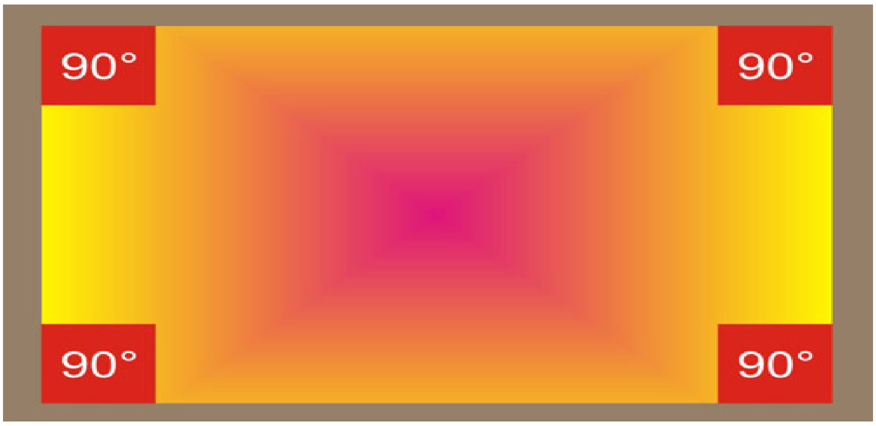

8. सभी भूखण्ड़ों की तुलना में वर्गाकार भूखण्ड़ को उत्तम माना जाता है। ऐसे भूखण्ड़ का स्वामी भाग्यशाली होता है।

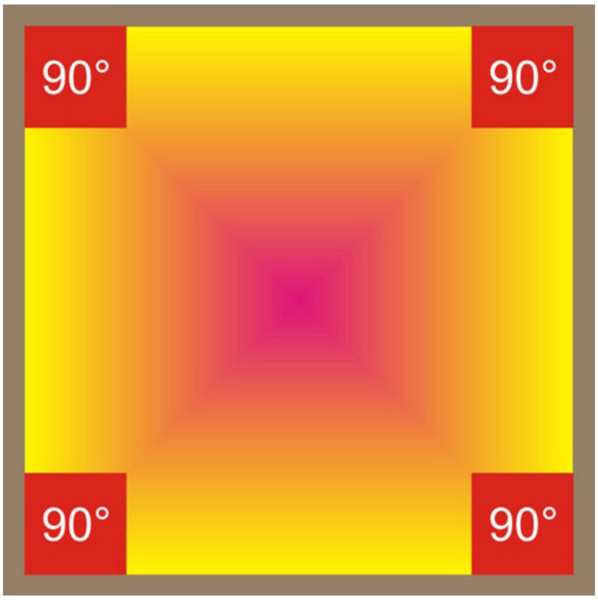

9. ऐसा भूखण्ड़ जिसमे तीन कोने हों तो भूमिस्वामी भूमिवाद– विवाद में फंसा रहता है और लड़ाई–झगड़े का कारण भी बनता है। ऐसे भूखण्ड़ का स्वामी मानसिक रोगी हो सकता है।

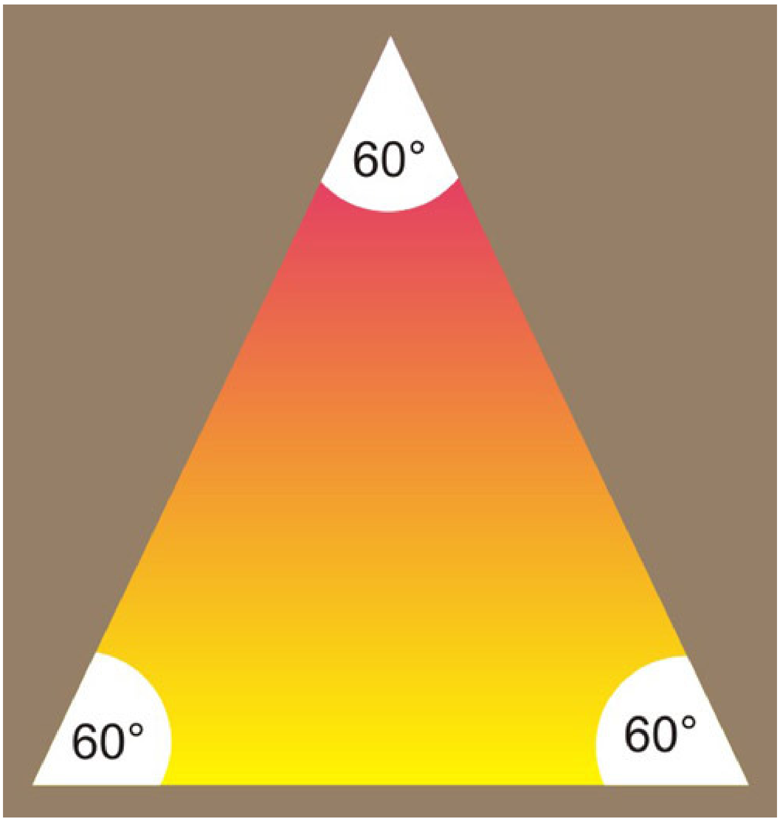

10. यदि भूखण्ड़ ईशान कोण (North/East) की तरफ झुका हुआ है या ईशान कोण की तरफ बड़ा हुआ है तो सबसे अधिक फायदेमन्द होता है तथा धन और आयु में वृद्धि करता है।

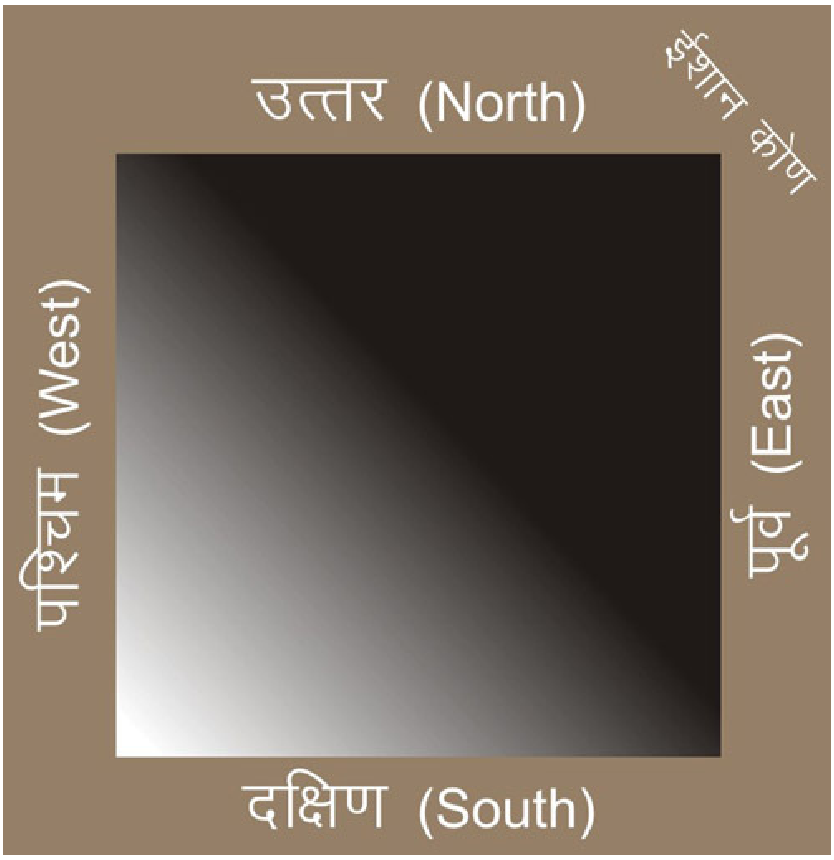

11. यदि भूखण्ड़ बीच में से ऊंचा और चारों तरफ से नीचा है तो यह सभी परिवार वालों के लिए सुख समृधि, शान्ति और उन्नति प्रदान करता है।

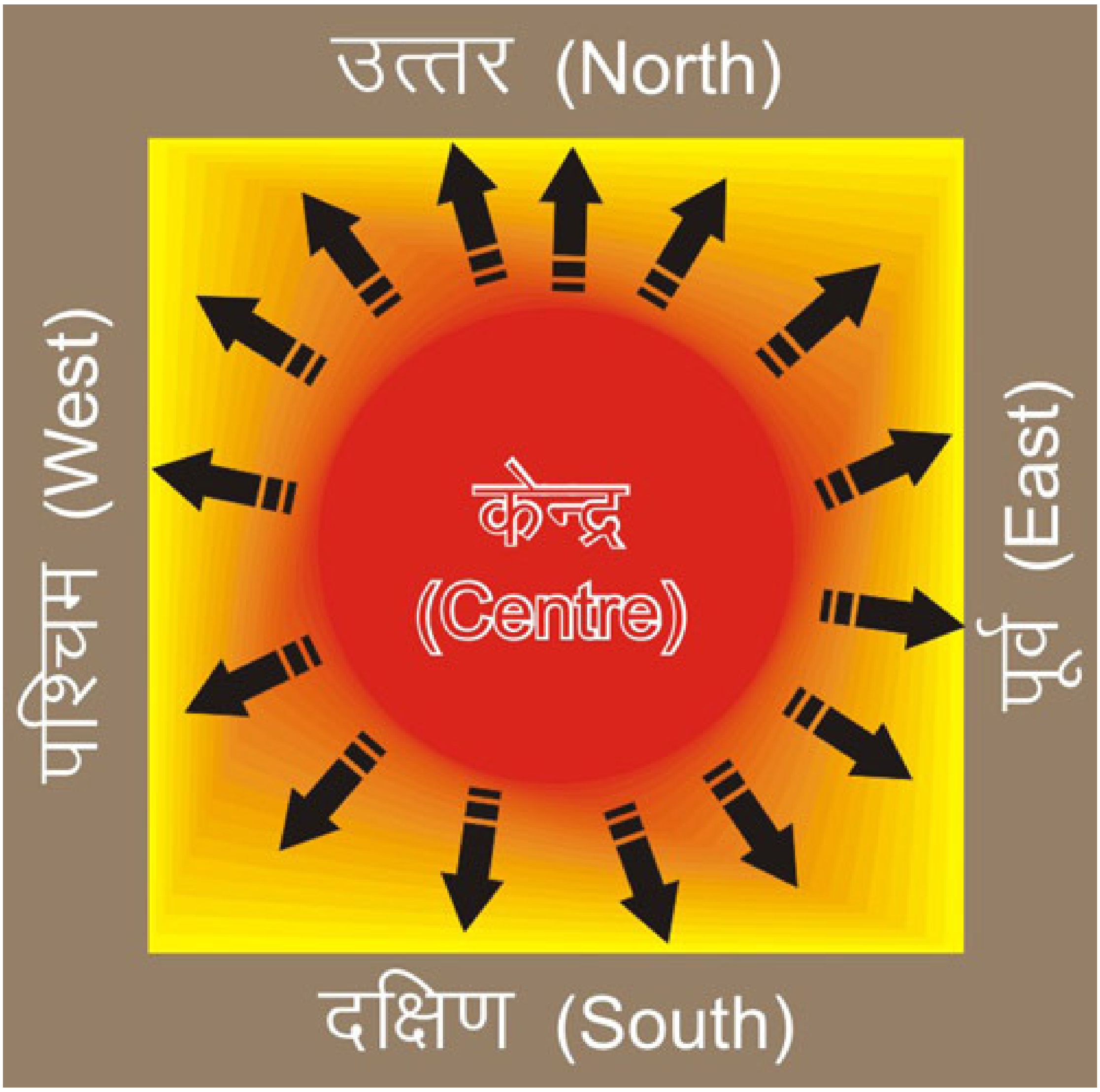

12. पश्चिम (West) की तरफ से झुकी हुई या नीची भूमि परिवार में अशान्ति और अकाल मृत्यु का कारण बन सकती है।

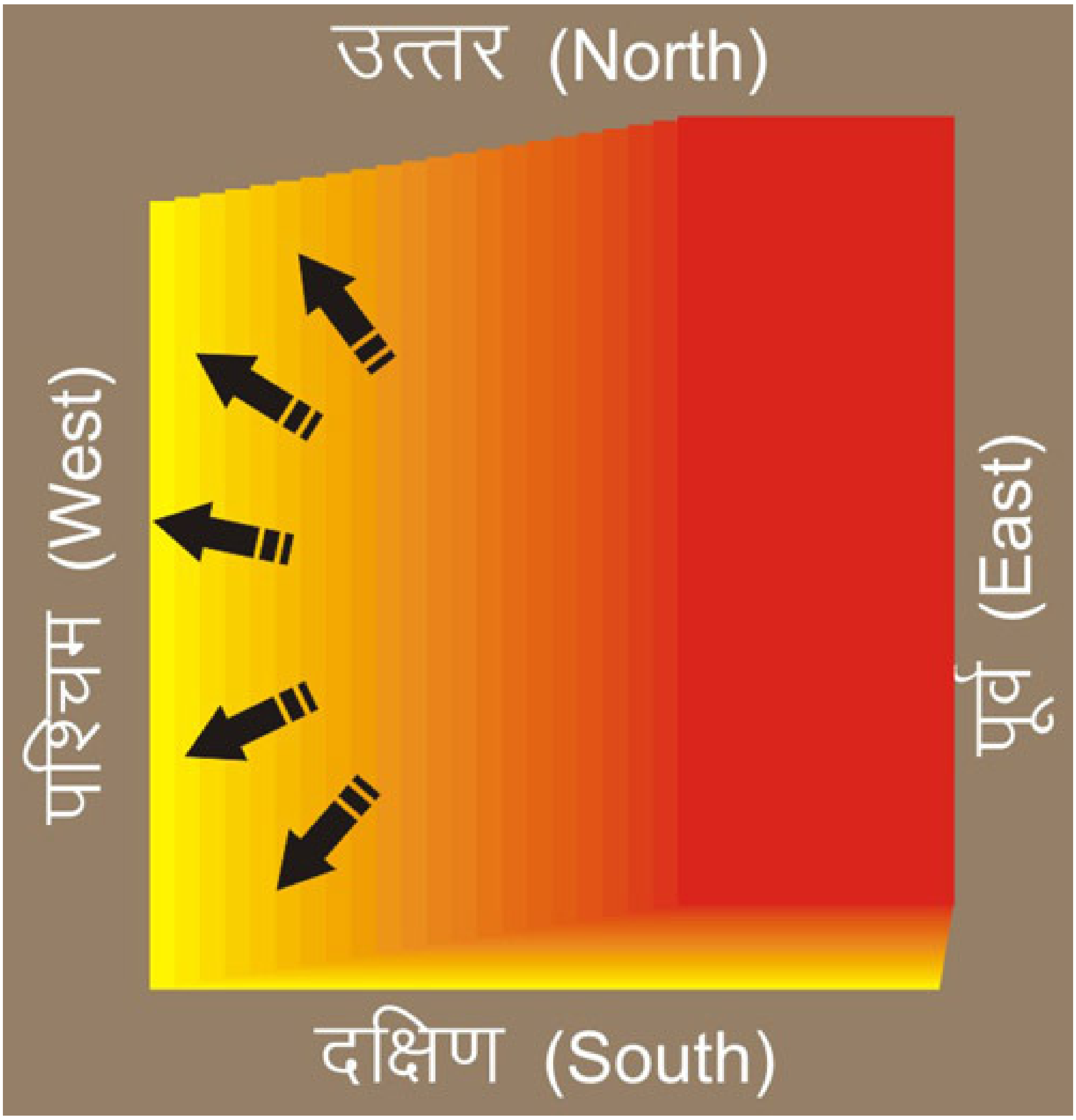

13. ऐसी भूमि जिसकी लम्बाई पूर्व और पश्चिम की तरफ अधिक हो परन्तु उत्तर और दक्षिण दिशा में ऊंची और केन्द्र में नीची भूमि हो तो यह हर प्रकार से हानिकारक बताई गई है।

ब्रह्माण्ड़ में व्याप्त पंच महाभूत (जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश) हमारे रोजमर्रा के जीवन पर सकारात्मक एवं नकारात्मक, दोनो का

सीधा असर ड़ालते हैं जैसेः– **जल** हमारी प्यास बुझाता है पर अधिक वर्षा होने के कारण बाढ़ आदि लाकर नुकसान भी करता है। **अग्नि** के बिना हम भोजन को पका नही सकते, इसकी मदद से हमें पका हुआ भोजन आदि मिलता है। पर यही अग्नि असावधानी के कारण हमें और हमारे घर आदि को नुकसान पहुंचा सकती है। **वायु** हमें जीने के लिए ऑक्सिजन देती है। पर आंधी तूफान लाकर मानव जीवन में तबाही मचा सकती है। **पृथ्वी** से ही हमें रहने के लिए ऊँचे–ऊँचे मकान और इमारतों के लिए जगह मिलती है। पर भूकंप के कारण हमें नुकसान भी उठाना पड़ता है। **आकाश** पृथ्वी के ऊपर एक छत का काम करता है और सूर्य की हानिकारक किरणों से हमें बचाता है, पर यही आकाश उन्हीं किरणों को प्रवेश करवाकर हमें नुकसान भी करवा सकता है। इससे स्पष्ट है कि सभी तत्व अपने नकारात्मक और सकारात्मक दोनों ही प्रकार की शक्तियां रखकर हमें प्रभावित कर सकते हैं।

अनेकों घरों, भूखंड़ों, फैक्ट्रियों आदि के निरीक्षण के बाद उनमें कोई न कोई वास्तु दोष अवश्य पाया गया है, जिसके कारण कहीं भाईयों में आपसी झगड़ा या कोर्ट–कचेहरी चल रहा है, फैक्ट्री के मालिक या मैनेजर का मजदूरों के साथ मन–मुटाव या झगड़ा चल रहा है, जिसके कारण मजदूरों का मन लगाकर काम न करना आदि परेशानियां जन्म लेती हैं, घर में बच्चों के आपसी झगड़े और पढ़ाई में मन न लगना, शारीरिक रूप से कमजोर होना, कर्जा, बीमारी, घर में सभी की सहनशीलता अत्यन्त कम होना, अचानक लगातार दुर्घटनाएँ होना, किसी का भी घर पर मन न लगना आदि वास्तु दोषों को दर्शाता है, यदि हम वास्तु नियमों या उनके परिहारों को जीवन में प्रयोग में लाते हैं तो सभी

समस्याओं को समाप्त या फिर उनके नकारात्मक असर कम कर सकते हैं।

पंच तत्वों के अनुसार घर को बनाना ही वास्तु शास्त्र का रहस्य है। यहां तक कि ग्रह, नक्षत्र, राशियां, दिशाओं के देवता आदि भी नकारात्मक उर्जा को कम करते हैं और सकारात्मक उर्जा को बढ़ाते हैं जैसे राशियां भी अपने गुणधर्म के अनुसार चर/स्थिर/द्विस्वभाव होती हैं। उत्तर (North) दिशा में कुम्भ राशि होती है, जोकि एक स्थिर राशि है और इस दिशा का देवता कुबेर है। यह स्थान धन रखने के लिए उत्तम स्थान है। स्थिर राशि का स्वभाव धन को रोकेगा और धन के देवता का आशीर्वाद उसको बढ़ाएगा। यदि धन को पूर्व (East) दिशा, मेष राशि में रखा जाए तो मेष राशि का स्वभाव चर होने के कारण धन आएगा, पर घर मे चर स्थान पर रखने की वजह से जल्दी चला जाएगा।

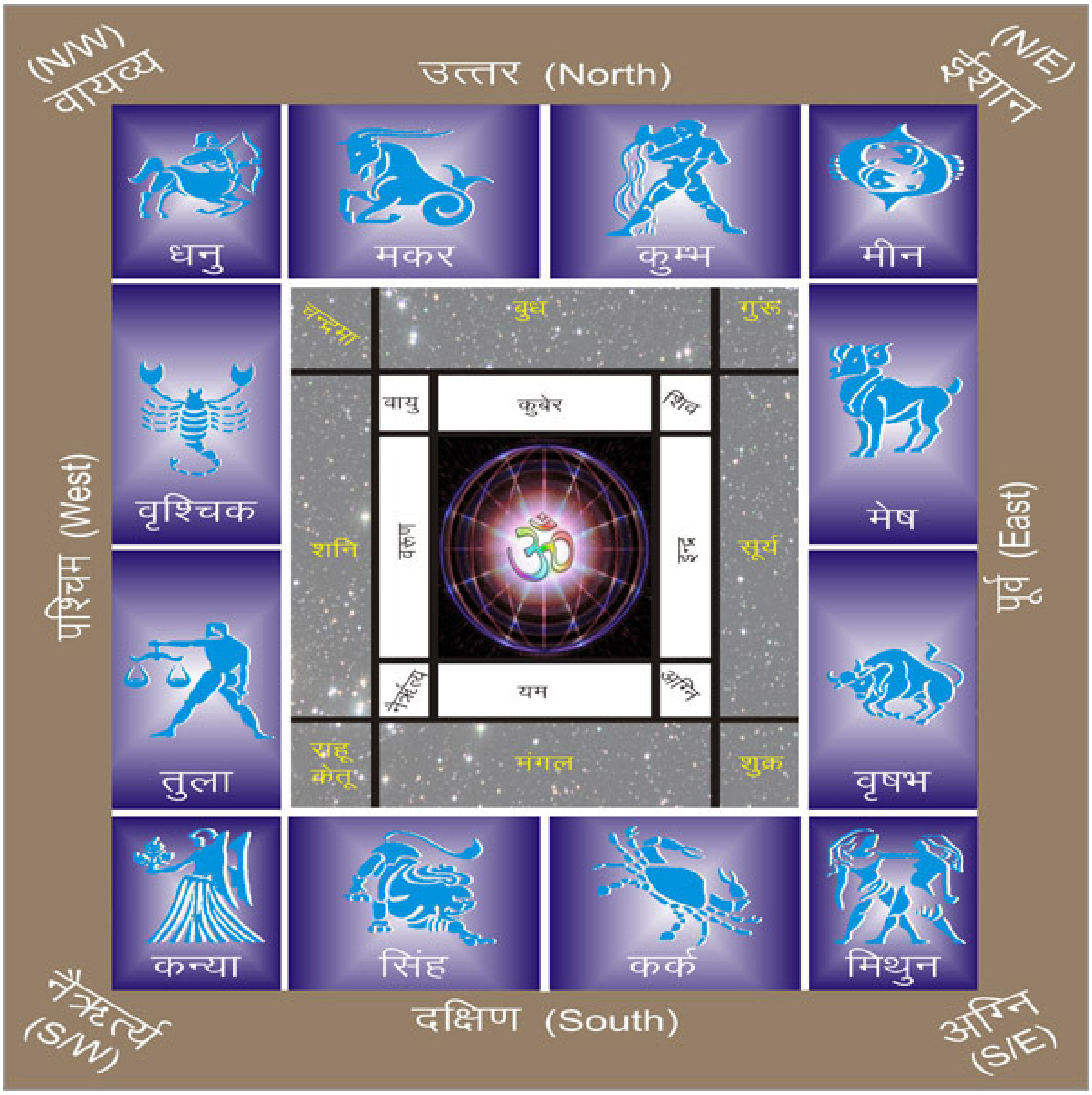

नारद पुराण के अनुसार व्यक्ति के जन्म नाम के अनुसार उसे किस दिशा में जाकर रहना चाहिए या किस दिशा में नौकरी आसानी से मिल सकती है या किस दिशा में जाकर व्यापार करना चाहिए, के लिए भी गणना की गई है ताकि व्यक्ति विशेष, एक विशेष स्थान पर जाकर प्रगति और शान्ति प्राप्त कर सके। जब एक व्यक्ति एक स्थान से दूसरे

स्थान रहने या नौकरी की तलाश में जाता है तो वह स्थान उसके लिए कैसा रहेगा या उसके लिए कौन सा स्थान रहने या नौकरी के लिए अच्छा रहेगा इसकी गणना नीचे दिए गए वर्गों के आधार पर की जा सकती है।

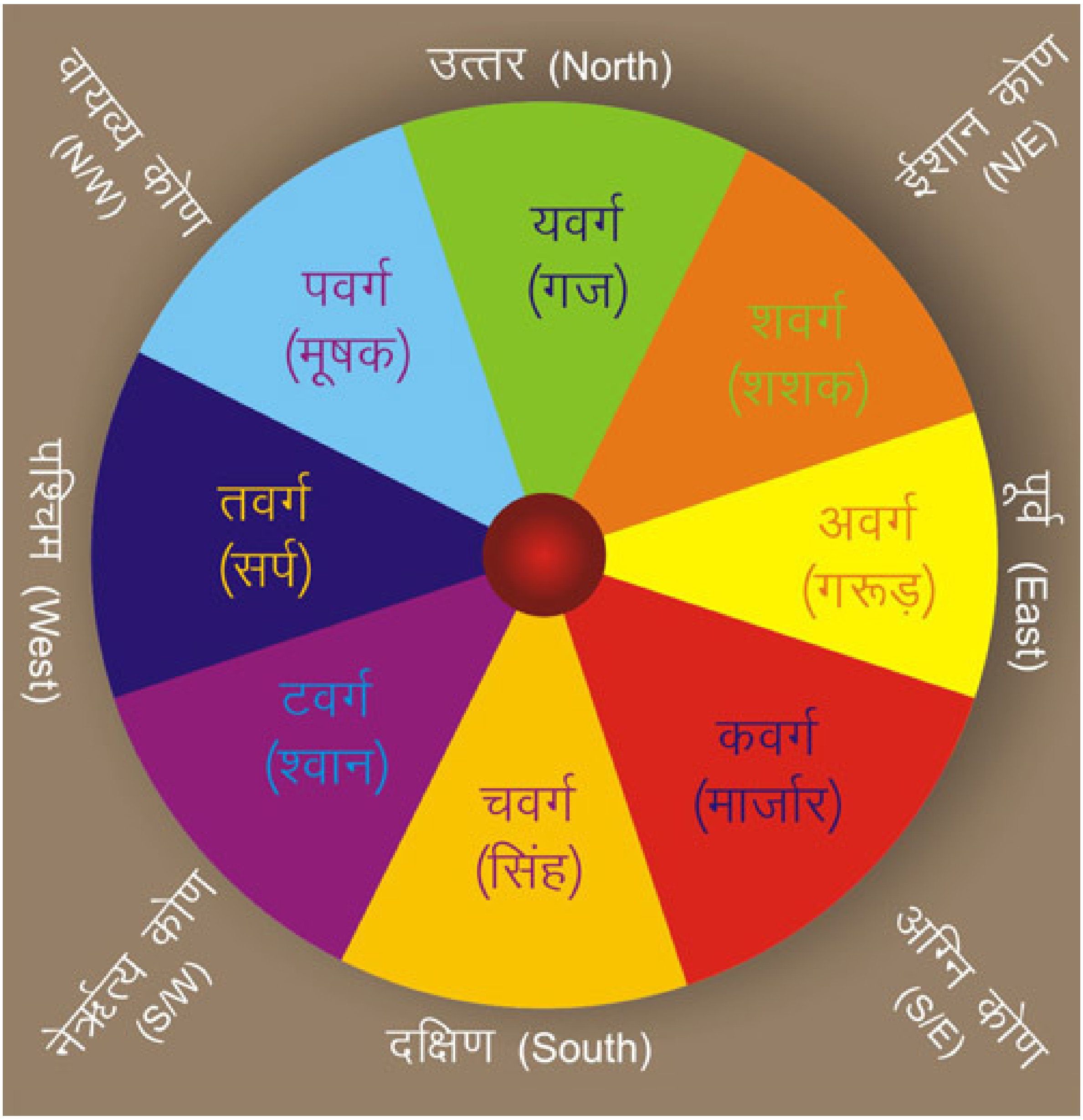

एक वर्ग अपने से पांचवें वर्ग से शत्रुता रखता है। जैसे सिंह और हिरण, बिल्ली और चूहा, सर्प और गरूड आदि। माना योगी नामक व्यक्ति रहने के लिए मुम्बई जाना चाहता है। यहां पर योगी का यवर्ग यानि हिरन बनता है और मुम्बई पवर्ग यानि चूहा बनता है। जोकि आपस में शत्रुता नही रखते हैं क्योंकि पंचम से पंचम नही हैं। इसलिए योगी का मुम्बई में जाकर रहना शुभ है। वास्तु के अनुसार मुम्बई शहर उसकी उन्नति, शांति और सुख के लिए ठीक है।

अक्षरों के अनुसार वास्तु चक्र

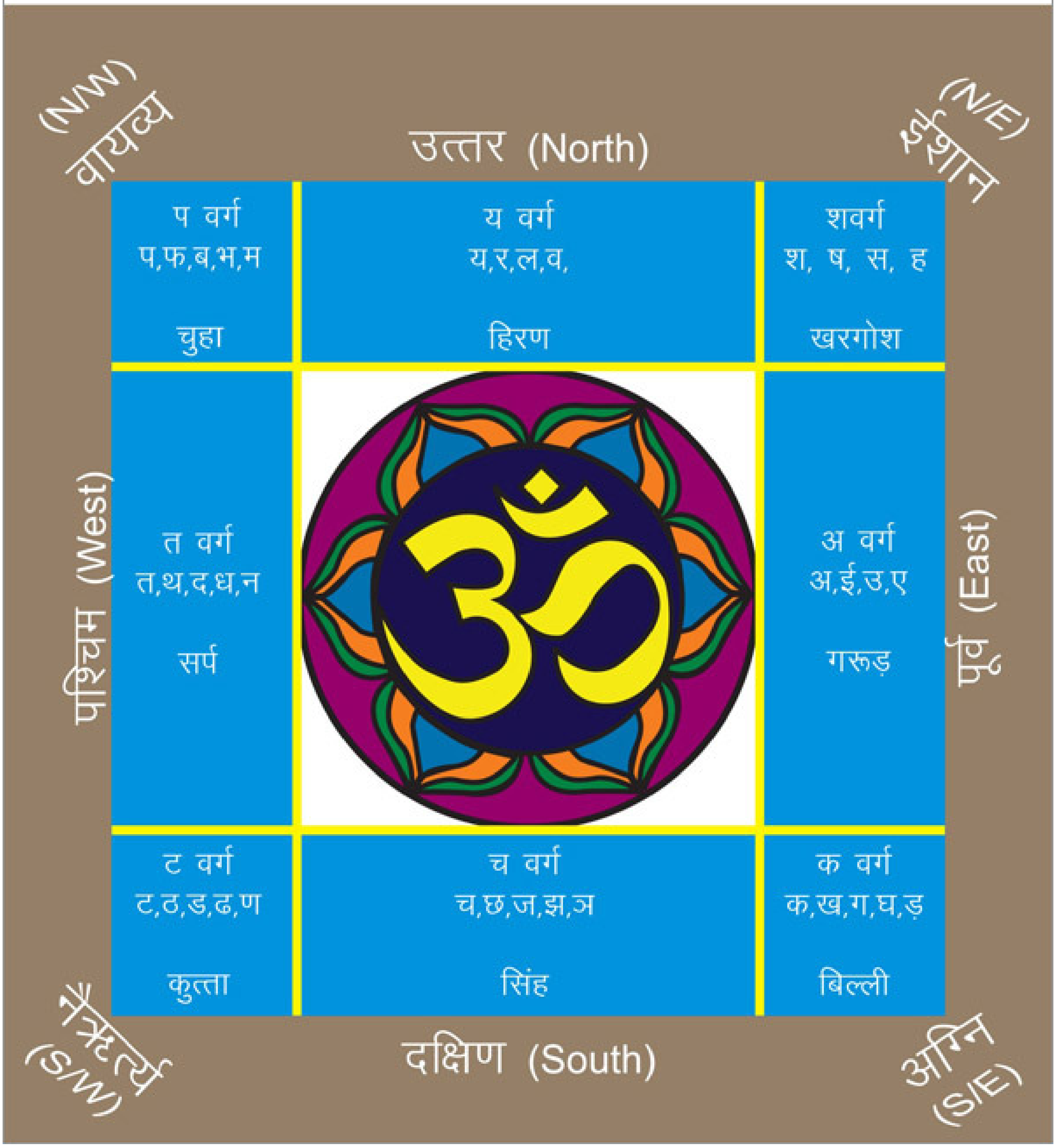

दूसरा उदाहरणः— यदि योगी जयपुर जाना चाहे तो योगी का वर्ग हिरण और जयपुर चवर्ग में आता है। यानि सिंह जो आपस में शत्रु

है, क्योंकि पंचम से पंचम है। हिरण और सिंह स्वाभाविक शत्रु भाव होने के कारण योगी का जयपुर जाना ठीक नही है। कौन सी दिशा आपको सभी प्रकार की उन्नति, शांति और सुख देगी जानने के लिए व्यक्ति के नाम, नक्षत्र और राशि का मिलान, स्थान के नाम, नक्षत्र और राशि से किया जाता है। यह भी एक अचूक उपाय है।

हमारे ऋषि मुनियों ने बताया है कि प्रत्येक दिशा का एक ग्रह और एक देवता भी होता है। जो जातक की समस्याओं, रूकावटों, परेशानियों और झगड़ों आदि को दूर करने में सहयोग करते हैं।

देवताओं और ग्रहों के स्थान